कपास में सफ़ेद मक्खी व अन्य नाशीजीव खतरे की सूचना एवं सलाह

(22 अगस्त 2017)

सफ़ेद मक्खी ग्रसित कपास पत्ती

पंजाब में 18-19 अगस्त 2017 के दौरान भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसन्धान केंद्, नयी दिल्ली की कपास टीम द्वारा पंजाब के फाजिल्का, मुक्तसर, बठिंडा एवं मानसा जनपदों में किये गए सर्वेक्षण में यह पाया गया कि फाजिल्का एवं मानसा में कपास के कुछ क्षेत्र में सफ़ेद मक्खी, का प्रकोप बढ़ रहा है अतः किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि :

1- कपास की फसल में प्रति एकड़ में 1 लीटर अजाडीरक्तिन 1500 पीपीएम 200 लीटर पानी के साथ 200 ग्राम डिटर्जेंट पावडर मिलाकर छिडकाव करें ।

2- यदि फसल में सफ़ेद मक्खी की संख्या औसतन 6-8 प्रति पत्ती एवं हरा तेला 1-2 प्रति पत्ती दिखाई पड़े तो डायाफेनथयुरोंन (50 % डब्ल्यू पी) 200 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी के साथ छिडकाव करें तथा ध्यान रखें कि छिडकाव से पूर्व खेत में पर्याप्त नमी मौजूद हो ।

3- यदि पहले एक बार डायाफेनथयुरोंन (50 % डब्ल्यू पी) का छिडकाव किया जा चुका हो और पुनः सफ़ेद मक्खी की संख्या औसतन 6-8 प्रति पत्ती एवं हरा तेला 1-2 प्रति पत्ती दिखाई पड़े तो फ्लोनिकमिद (50 डब्ल्यू जी) 80 ग्राम या बुप्रोफेज़िन (25 एस सी) 400 मिली या पायरीप्रोक्सीफेन (10 % ई सी) 400 मिली लीटर कीटनाशक प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ छिडकाव करें ।

4- चूँकि कपास की फसल टिंडे (बाल) बनने एवं टिंडे वृद्धि की अवस्था में है इसलिए सलाह दी जाती है कि कपास में 2 % यूरिया + 1% मैग्नीशियम सल्फेट+ 0.5 % जिंक सल्फेट + 0.2 % बोरोन के 15 दिन के अन्तराल पर दो पर्णीय छिडकाव तथा उसके बाद 2% डी ए पी का पर्णीय छिडकाव करें ।

क्या न करें

1- नीम के साथ कोई अन्य रासायनिक कीटनाशक न मिलाएं

2- बिना शिफारिश के दो कीटनाशकों को एक साथ मिलाकर प्रयोग न करें

3- किसी भी एक कीटनाशक को एक फसल अवधि के दौरान बार-बार प्रयोग न करें